ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-5* June- 2021
Innovation The Research Concept

नरसिंहपुर जिले में जनजातियों की आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति

Economic, Social and Religious Status of Tribes in Narsinghpur District

Paper Submission: 03/06/2021, Date of Acceptance: 15/06/2021, Date of Publication: 25/06/2021

कीर्ति रजक
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर, म.प्र., भारत

सारांश

नरसिंहपुर जिला मध्यप्रदेश के 52 जिलों में से एक है। यह प्रदेश के लगभग मध्य में स्थित है। यह जबलपुर संभाग के अंतर्गत आता है। जिले में निवास करने वाली महत्वपूर्ण जातियाँ ब्राम्हण, राजपूत, लोधी, नेमा, तेली तथा अनुसूचित जातियों में चमार, बसोर तथा जनजातियों में आदिवासी गोंड़ और उनकी उपजातियाँ भरिया, भूमिया, उराव, परधान, सरौती, पारधी, कोल आदि हैं। अत्यल्प मात्रा में भयना, भत्तरी, भील, धनवार, कोरकू, कोरबा, परजा आदि निवास करते हैं। यद्यपि शहरी क्षेत्रों के सम्पर्क और गैर अनुसूचित जनजाति विशेषकर हिन्दू समुदाय के कारण इनके रीति–रिवाजों में रूढ़ीगत परिवर्तन आया है, परन्तु धर्म के क्षेत्र में बहुत ही कम परिवर्तन इनमें दिखाई देता है। जिले में आदिवासियों के प्रमुख धंधे और आय के साधन कृषि, पशुपालन, शिकार, वन्य उत्पादनों का संग्रह एवं अन्य सहायक उद्यम हैं।

जिले की प्रत्येक जाति में परिवार संगठन लगभग एकसा है। परिवार का मुखिया परिवार के सदस्यों एवं सम्पत्ति का एकछत्र अधिकारी एवं कर्ताधर्ता होता है। जिले में अनुसूचित जनजाति में से गौंड़ों की संख्या ही अधिक है। शहरी जीवन के समीप रहने वाले ये आदिवासी कुछ उन्नत हो चले हैं, परन्तु आवागमन के साधन से दूर रहने वाले आदिवासी अब भी लगभग पूर्व स्थिति में है।

Narsinghpur district is one of the 52 districts of Madhya Pradesh. It is situated almost in the middle of the state. It comes under Jabalpur division. The important castes residing in the district are Brahmins, Rajputs, Lodhis, Nema, Teli and Chamars, Basor among the Scheduled Castes and tribal Gonds and their sub-castes Bharia, Bhumiya, Urao, Pardhan, Sarauti, Pardhi, Kol etc. In small quantities, Bhayana, Bhattri, Bhil, Dhanwar, Korku, Korba, Paraja etc. reside. Although there has been a customary change in their customs due to the contact with the urban areas and the non-scheduled tribes especially the Hindu community, but very little change is visible in the field of religion. The main occupations and means of income of the tribals in the district are agriculture, animal husbandry, hunting, collection of forest produce and other allied enterprises. The family organization is almost the same in each caste of the district. The head of the family is the sole authority and doer of the family members and property. The number of Gounds is more in the district among the Scheduled Tribes. These tribals living close to the urban life have become somewhat advanced, but the tribals living away from the means of transport are still in almost the former condition.

मुख्य शब्द : आदिवासी, जनजातियाँ
Tribals, Tribes

प्रस्तावना

भारत के ह्रदय स्थल मध्यप्रदेश के मध्य में स्थित एक छोटा सा जिला नरसिंहपुर के नाम से जाना जाता है। इसका इतिहास समृद्धिशाली और भूमि उर्वर है। इसका इतिहास समृद्धिशाली और भूमि उर्वर है। यह जिला म.प्र. के मध्य भाग में स्थित है, और इसमें ऊपर नर्मदा घाटी का एक भाग सम्मिलित है, जिसके उत्तर में विंध्याचल पर्वत तथा दक्षिण में सतपुड़ा पर्वत स्थित है। यह जबलपुर संभाग के आयुक्त का पश्चिमी मध्य जिला है। जिले की भौगोलिक स्थिति $22^0$45′ उत्तर और $23^0$15′ उत्तर अक्षांश तथा $78^0$38′ पूर्व और $79^0$38′

पूर्व देशांश के मध्य स्थित है। जिले का धुर उत्तरी भाग कर्क–रेखा के दक्षिण में 17 मील (27.26 कि.मी.) से भी अधिक दूरी पर है। बम्बई–इलाहाबाद रेलवे लाईन पश्चिम से पूर्व की ओर जिले को पार करती है, और मुख्यालय नगर जबलपुर में 50 मील (80.47 कि.मी.) पश्चिम में स्थित है।

नरसिंहपुर जिले का आकार लगभग चतुष्कोणीय है, जो पूर्व–पश्चिम दिशा में लम्बाकार फैला हुआ है? जिले की अधिकतम लम्बाई नर्मदा के किनारे के साथ–साथ पूर्व से पश्चिम में लगभग 75 मील (120.70 कि.मी.) है, जबकि उत्तर से दक्षिण की ओर यह केवल 40 मील (64.5 कि.मी.) हैं।[1] इस जिले के पूर्व में जबलपुर जिला, पूर्वोत्तर में दमोह जिला, उत्तर में सागर जिला, उत्तर–पश्चिम में रायसेन जिला, दक्षिण–पश्चिम में होशंगाबाद जिला, दक्षिण में छिंदवाड़ा जिला, दक्षिण–पूर्व में सिवनी जिला स्थित है। जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 5133 वर्ग कि.मी. है।[2] जिले की जनसंख्या वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार 10,91,854 है। जिसमें 5,68,810 पुरूष तथा 5,23,044 स्त्रियाँ शामिल हैं।[3]

हिन्दू समाज अनेक जातियों, उपजातियों में विभक्त है। जिले में निवास करने वाली महत्वपूर्ण जातियाँ, ब्राम्हण, राजपूत, लोधी, नेमा, तेली तथा अनुसूचित जातियों में चमार, बसोर तथा जनजातियों में आदिवासी गौंड़[4] और उनकी उपजातियाँ भरिया, भूमिया, उराव, परधान, सरौती, पारधी, कोल आदि हैं। अत्यल्प मात्रा में भयना, भत्तरी, भील, धनवार, कोरकू, कोरबा, परजा आदि निवास करते हैं। यद्यपि शहरी क्षेत्रों के सम्पर्क और गैर अनुसूचित जनजाति विशेषकर हिन्दू समुदाय के कारण इनके रीति–रिवाजों में रूढ़िगत परिवर्तन आया है, परन्तु धर्म के क्षेत्र में बहुत ही कम परिवर्तन इनमें दिखाई देता है।[5]

यह आदिवासी वर्ग के लोग अपने आपको पूर्णरूपेण हिन्दू मानते हैं और अब यह वर्ग अपने आपको आदिवासी कहलाना पसन्द नहीं करता है। जिले में गौंड़ों के दो वर्ग हैं, राजगौंड़ तथा धुरगौंड। राजगौंड़ अपने आपको कुलीन वर्ग का समझते हैं, और वे धुर गौंड़ों को अपने से निम्न श्रेणी का मानते हैं। आदिवासियों की लोक संस्कृति तथा हिन्दुओं की लोक संस्कृति में कोई विशेष अंतर नहीं है, परन्तु इनके द्वारा देवी देवताओं की पूजा के सम्बंध में भिन्नता पायी जाती है। जैसे–हिन्दुओं में ग्राम देवता की पूजा के अतिरिक्त गौंड़ अपने बड़ा देव की भी पूजा करते हैं। जिसकी स्थापना घर के कोने में या घर के बाहर खेत में साज के वृक्ष के नीचे की जाती है, परन्तु गौंड़ों द्वारा पूजे जाने वाले बड़ा देव तथा अन्य छोटे देवी–देवताओं की पूजा अन्य जाति के व्यक्तियों द्वारा नहीं की जाती है।[6]

आर्थिक स्थिति

आदिवासी जनजातियों की आर्थिक स्थिति के विषय में सभी विद्वानों का दृष्टिकोण लगभग एक सा रहा है। वह यह कि आदिवासी जनजातियों के लोग अत्यंत निर्धन है। उनके मकानों व घर के सामान का कोई विशेष मूल्य नहीं है।[7] जिले में आदिवासियों के प्रमुख धंधे और आय के साधन कृषि, पशुपालन, शिकार, वन्य उत्पादनों का संग्रह एवं अन्य सहायक उद्यम हैं। कृषि इनका परम्परागत धंधा है, परन्तु जिस भूमि पर ये खेती करते हैं वह अधिकांशतः पहाड़ी, पठारी एक फसली है। आज भी ये कृषि की उन्नत पद्धतियों, खाद, बीज और सिंचाई की तकनीक से अनभिज्ञ हैं। घरेलू उपयोग के लिए बाड़ों में साग–सब्जी पैदा कर लेते हैं। पशुपालन की दृष्टि से ये गाय, भैंस, बकरी, मुर्गी आदि पालते हैं। इनका एक ओर घरेलू उपयोग होता है, दूसरी ओर घी, दूध, खोवा का थोड़ा–बहुत विक्रय भी कर लेते हैं। सत्य तो यह है कि ये आदिवासी न तो बहुत अच्छे किसान हैं और न ही अच्छे पशुपालक। वन्य पशुओं और पक्षियों का शिकार, मछली मारना इनका परम्परागत उद्यम है। इनसे ये खाने पीने की पूर्ति करते हैं, और इनसे संबंधित चीजें बेचकर अपने उपयोग की वस्तुएं खरीदते हैं। आदिवासी वन्य उत्पादनों पर भी निर्भर रहते हैं। इमारती लकड़ी, तेदूंपत्ते, हर्रा, बहेरा, आंवला, महुआ, चिरौंजी, फल–फूल, जड़े, जंगली घासें, इमली, बेर आदि एकत्रित कर इस सहायक उद्यम के द्वारा अपना जीवन यापन करते हैं। साथ ही पेड़ों की कटाई खदानों में काम और वन्य वस्तुओं से बिक्री योग्य सामग्री बनाना आदि भी इनके उदरपूर्ति के उद्यम हैं।[8]

सामाजिक स्थिति

नरसिंहपुर जिले की प्रत्येक जाति में परिवार संगठन लगभग एक सा है। परिवार मुखिया, परिवार के सदस्यों एवं सम्पत्ति का एकछत्र अधिकारी एवं कर्ताधर्ता होता है। वर्तमान में यह प्रवृत्ति बहुत ही अल्प मात्रा में विखराव की ओर है। विवाहित बच्चे अलग परिवार बनाने के पक्ष में रहते हैं। लगभग ऐसी ही व्यवस्था जनजातियों में भी है। इनमें आज भी जाति पंचायतों का प्रभुत्व है। ये जाति पंचायतें जुर्माना या बहिष्कार के माध्यम से जाति में कसाब बनाए हुए हैं। इनके वैवाहिक व अन्य संस्कार लगभग सामान्य हिन्दुओं जैसे है। बाल–विवाह और गौना संस्कार इनमें आज भी है। इनके पहनावे आदि में भी बहुत कम अन्तर आया है। महिलाएँ गहने पहनने, गोदना गुदाने का शौक रखती हैं। पुरूष और महिलाएं मिलकर अपने त्यौहार आदि आर्थिक अभाव में भी बड़े उत्साह से मनाते है। गौंड़ों के कर्मा, शैतान, सरगौदा, किरारी के बिलवारी और प्रायः सभी के दिवाली गीत, नर्मदा गीत, फाग गीत प्रमुख है।

अनुसूचित जनजातियों में क्रास कजिन (सगे भाईयों–बहनों के बीच विवाह छोड़कर अन्य भाईयों–बहनों के बीच विवाह संबंध) विवाह प्रचलित है। गौड़ों में अपने भाई की विधवा से विवाह करने का अधिकार है। ब्राम्हणों की सहायता से अनेक सम्पन्न गौंड़ परिवारों ने अपने आपको क्षत्रियों के समकक्ष बना लिया है, और वे जनेऊ धारण करने लगे हैं। वैसे तो सभी जातियों में थोड़े बहुत रूप में अंधविश्वास मौजूद है, परन्तु अनुसूचित जनजातियों में विशेष रूप से आज भी यह मान्य है जैसे – बिल्ली का दाहिने से बाँये लौटना, भरा घड़ा सामने दिख जाना, अर्थी का सामने मिल जाना, गाय का बछड़े को दुलार करते देखा जाना आदि शुभ सूचक हैं, एवं सामने की छींक, काने या तेली का मिलना, विवाह आदि में विधवा की उपस्थिति अशुभ सूचक माने जाते हैं। दवाओं के स्थान पर झाड़–फूंक में विश्वास ग्रामीण क्षेत्रों में प्रायः सर्वत्र है।[9] अत्यल्प बड़े सम्पन्न आदिवासियों को छोड़कर प्रायः

आदिवासी साधारण छोटे, कच्चे, टपरानुमा मकानों में गुजर करते हैं। पुरूष धोती, अंगी पहनते और गमछा रखते हैं। महिलाएं पोलका, धोती, अंगिया पहनती हैं। दिनभर के काम की थकान के बाद संध्या को विश्राम के पूर्व वे लोकगीत और नृत्यों में थकान मिटाते हैं। इनका निवास शहरी बस्तियों से दूर वन प्रान्तों में होने के कारण इनके जीवन–यापन की निर्भरता वन, वनोपज, कृषि, शिकार, पशुपालन पर परम्परागत रूप से चली आ रही है। जिले में अनुसूचित जनजाति में से गौंड़ों की संख्या ही अधिक है। शहरी जीवन के समीप रहने वाले ये आदिवासी कुछ उन्नत हो चले हैं, परन्तु आवागमन के साधन से दूर रहने वाले आदिवासी अब भी लगभग पूर्व स्थिति में है। इनका व्यय बजट प्रधान रूप से भोजन पर और फिर वस्त्र, त्यौहार पर होता है। शराब और तम्बाकू पर वे अधिक व्यय करते हैं। मुख्य भोजन चांवल, सब्जी, दाल एवं पूरक भोजन जंगली फल, कंद एवं जड़े हैं। सामान्य खुराक चांवल एवं मक्का है। वस्त्र मात्र तन ढांकने को पहनते हैं। वे अज्ञानतावश एवं आवश्यक चीजें लेने की जरूरत के कारण अपनी वस्तुएं कम भाव पर विक्रय कर देते हैं, और अपनी जरूरत की चीजें मंहगे भाव में खरीदने को मजबूर हो जाते हैं। उनकी अल्प आय अधिक खर्च उन्हें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक कर्जदार बनाए रखती है, और व्यापारी, ठेकेदारों, कर्जदाताओं की सेवाओं में बांधे रखती है। निरक्षरता, सीधापन, सत्य पर आरूढ़ता, शंकालु न होना, अंधविश्वास, सामाजिक–आर्थिक रूढ़ियाँ कानून के प्रति अनभिज्ञता उन्हें गरीब बनाए हुए है।[10] किन्तु अब आर्थिक तथा सामाजिक दोनों स्थितियों में बहुत परिवर्तन हुआ है तथा उनकी इस सामाजिक स्थिति में भी कुछ सुधार दृष्टिगोचर होता है।

धार्मिक स्थिति

नरसिंहपुर जिले के आदिवासियों द्वारा पूजे जाने वाले प्रमुख देवी–देवताओं में नागदेव, नारायण देवता, बड़ा देव, हनुमान भीमसेन, मेघनाद, सिंगबौंगा, मारंगबरू, देवी भवानी, दूल्हादेव, खुरिया रानी, ठाकुर बाबा, नकटी देवी, बाघेश्वर, माटीदेव, पर्वतदेव, धरमदेव, नागदेवता, रम्भा देवी, दन्तेश्वरी देवी, सांडोवा आदि हैं।

जिले के आदिवासी एवं हिन्दुओं में बहुत मुश्किल से अन्तर किया जा सकता है।, सामान्यतः यह हिन्दु समुदाय में मिल चुके हैं। आदिवासियों के माने जाने वाले देवी–देवता हिन्दुओं के माने जाने वाले देवी–देवताओं से कुछ विशेष भिन्न नहीं हैं।[11] जिले में दो सजातीय विवाह वाले वर्ग है। राजगौंड़ एवं धुरगौंड़। राजगौंड़ आज भी अपने आपको कुलीन वर्ग के समझते हैं, तथा धुरगौंड़ों को अपने से निम्न श्रेणी का मानते हैं। गौंड़ कुलों में राजगौंड़ों का सर्वोच्च स्थान है, वे लोग जनेऊ धारण करते हैं। राजगौंड़ों में गोतान्तर विवाह वाले अनेक वर्ग हैं, किन्तु जिले में सामान्यतः पाये जाने वाले वर्ग मरतकोला जिनके विषय में कहा जाता है कि वह सात छोटे–छोटे देवताओं की पूजा करते हैं एवं धुर्वे, कुमरा, सोईयाम पांच छोटे–छोटे देवताओं की पूजा करते हैं। इसी प्रकार सामान्यतः पाये जाने वाले धुरगौंड़ों में कुल विजातीय विवाह वाले उपवर्ग हैं – मेरावी, मारकाम (मरकाम), श्रीयाम, टेकम, मर्सकोला, करिआन तथा कुम्बार। इन उपवर्गीय गौंड़ों को रावणवंशी भी कहा जाता है, क्योंकि ये लोग राक्षसों के राजा रावण के वंशज के माने जाते हैं।[12]

जनजातीय समस्यायें

नरसिंहपुर जिले में अधिकांश जनजातियाँ अन्य जिलों के ही समान जंगलों, पहाड़ों तथा दुर्गम स्थानों में रहती हैं। अतः उनकी समस्यायें ग्रामीण तथा नगरीय लोगों की समस्याओं से थोड़ी भिन्न है। सम्पूर्ण जनजाति गहन संक्रमण से गुजर रही है। संक्षेप में जनजातियों की प्रमुख समस्यायें इस प्रकार है :–

1. स्वास्थ्य व कुपोषण की समस्या।
2. अज्ञान व अशिक्षा का कुप्रभाव।
3. सांस्कृतिक सम्पर्क की समस्या।
4. ऋण ग्रस्तता एवं बेगारी व बेकारी।
5. मद्यपान व अन्य नशे की आदत।
6. विवाह सम्बंधी समस्यायें।

जनजातियों के उत्थान के लिए स्वतंत्रता के पूर्व ब्रिटिश शासन ने तो कोई प्रयास किए नही परन्तु स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने इनके उत्थान के लिए इन्हें संवैधानिक विशेषाधिकार दिये हैं, यद्यपि इस जिले में यह समाज अत्यधिक पिछड़ा होने के कारण व कार्य योजनाओं का उचित कार्यान्वयन न होने के कारण आज भी बहुत पिछड़ा हुआ है, परन्तु शासकीय प्रयासों व सामाजिक आंदोलनों के प्रभाव के फलस्वरूप इनके जीवन स्तर में कुछ अंतर जरूर आया है।[13] जनजाति समुदाय में व्याप्त आर्थिक सामाजिक और अन्य समस्याओं को दूर करते हुए उन्हें आर्थिक सामाजिक रूप से सक्षम करना ही जनजातियों का विकास है, ताकि उनके जीवन के सभी पहलुओं का संतुलित विकास हो और उन्हें भी सुख व संतुष्ट जीवन व्यतीत करने के अवसर प्राप्त हों। वस्तुतः जनजातियों के विकास का उद्देश्य विद्यमान विघटित जटिल व्यवस्थाओं को सुधारकर एक श्रेष्ठतर तथा अधिक कार्यशील जीवन का विकास करना है, ताकि वे लोग सक्षम और आत्मनिर्भर बने जिससे वे अपनी उन्नति के साथ ही राष्ट्र की प्रगति में अपना योगदान दे सकें।[14]

निष्कर्ष

संक्षेप में कहा जा सकता है कि इस जिले का जनजातीय समाज भारतीय समाज की भांति ही धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं से परिपूर्ण है तथा इन्हें आत्मसात किये हुए है। जिले की अनुसूचित जनजातियाँ सुदूर क्षेत्रों में निवास करती है। जहाँ संचार संसाधनों यातायात, स्वास्थ्य, शिक्षा तथा अन्य सुविधाओं की कमी है। शिक्षा से वंचित रहने के कारण ये जनजातियां आर्थिक दृष्टि से भी पिछड़ी हुई है। इनके पास जीविकोपार्जन का कोई स्थायी साधन नहीं है, यद्यपि शासन द्वारा इनके विकास के लिए कई योजनाएँ चलाई जा रही है। इनके आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक विकास के लिए समुचित प्रबंध किए जा रहे हैं। म.प्र. सरकार ने केन्द्रीय सहयोग से जनजातियों के विकास के लिए समयानुकूल प्रयास किए हैं। यद्यपि इस दिशा में आदिम जाति कल्याण विभाग द्वारा आदिवासियों के उत्थान हेतु विकास कार्यक्रम बनाए व क्रियान्वित किए जाते हैं। जिनमें आदिवासियों को असमर्थता, निर्धनता एवं शोषण से मुक्त करने और राजनैतिक जागरूकता के साथ–साथ उचित शिक्षा,

भोजन, स्वास्थ्य एवं आर्थिक–सामाजिक विकास के कार्य किए जाते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *म.प्र. जिला गजेटियर, नरसिंहपुर, वर्ष 1972, पृ. 01*
2. *जिला सांख्यिकी पुस्तिका, नरसिंहपुर, वर्ष 2012, पृ. 01*
3. *जिला सांख्यिकी पुस्तिका,, नरसिंहपुर, वर्ष 2015, पृ. 13*
4. *साहू, किशनलाल, नरसिंहपुर जिले की सामाजिक एवं आर्थिक संरचना तथा तत्संबंधी समस्याओं का अध्ययन सन् 1920 से 1964 तक, डॉक्टर हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.), में इतिहास विषय के अंतर्गत पी.एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध, वर्ष 1992, पृ. 104*
5. *अग्रवाल, कु. शीला, मध्यप्रदेश में नरसिंहपुर जिले के अनुसूचित जाति, जनजाति सामुदायिक विकासखण्डों के प्रशासन का अध्ययन, रा.दु.वि.वि. जबलपुर (म.प्र.)में राजनीति विज्ञान विषय के अंतर्गत पी.एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध–प्रबंध, वर्ष 1980, पृ. 05*
6. *साहू, किशनलाल, नरसिंहपुर जिले की सामाजिक एवं आर्थिक संरचना तथा तत्संबंधी समस्याओं का अध्ययन सन् 1920 से 1964 तक, डॉक्टर हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.), में इतिहास विषय के अंतर्गत पी.एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध, वर्ष 1992, पृ. 64–65.*
7. *वही, पृ. 100*
8. *अग्रवाल, कु. शीला, मध्यप्रदेश में नरसिंहपुर जिले के अनुसूचित जाति, जनजाति सामुदायिक विकासखण्डों के प्रशासन का अध्ययन, रा.दु.वि.वि. जबलपुर (म.प्र.)में राजनीति विज्ञान विषय के अंतर्गत पी.एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध–प्रबंध, वर्ष 1980, पृ. 07, 08*
9. *वही, पृ. 06*
10. *वही, पृ. 8, 9*
11. *साहू, किशनलाल, नरसिंहपुर जिले की सामाजिक एवं आर्थिक संरचना तथा तत्संबंधी समस्याओं का अध्ययन सन् 1920 से 1964 तक, डॉक्टर हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.), में इतिहास विषय के अंतर्गत पी.एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध, वर्ष 1992, पृ. 65, 66, 67, 68*
12. *वही, पृ. 101*
13. *वही पृ. 116, 117, 118*
14. *नर्मदांचल, शोध पत्रिका, सप्तम् संस्करण, जनवरी 2017, पृ. 35*